Dr. Vandana Suman
Associate Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
M.A. semester — III
Phil. CC — 10
Contemporary western Philosophy

1

Q. The function of Philosophy according to logical positivists?

Ans. → तार्किक प्रत्यक्षवाद पाश्चात्य दर्शन के समकालीन विचारधाराओं में अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस विचारधारा का विकास भी दार्शनिक विश्लेषण की पृष्ठभूमि में होता है। इसका प्रारम्भ Moritz Schlick के विचार से होता है जो Vienna विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र के प्राध्यापक थे उन्होंने अपने प्रयत्न के द्वारा कुछ दार्शनिक वैज्ञानिक और गणितज्ञों को एक साथ मिलाकर एक संस्था की स्थापना कि जिसका नाम Viennese Circle पड़ा। इसकी स्थापना 1928 ई० में हुई है। प्रारम्भ में इस संस्था के सदस्य Schlick Neurath, Carnap इत्यादि थे। लेकिन बाद में इसका विस्तार हुआ फलस्वरूप इसके सदस्य बाहर से भी अनेक व्यक्ति हो गये जिनमें A.J. Ayer, Wittgenstein इत्यादि थे।

तार्किक प्रत्यक्षवादियों ने मुख्य रूप से इस विचार को प्रतिपादित किया कि दर्शन का उद्देश्य विज्ञान को सुदृढ़ आधार प्रदान करता है और इसके क्षेत्र से वैसे विषयों को हटाना है जिनका इन्द्रिय परीक्षण सम्भव नहीं है इसके लिए इन लोगों ने भाषा-विश्लेषण की पद्धति को ही उपयुक्त

पद्धति के रूप में स्वीकार किया।

तार्किक प्रत्यक्षवाद को समझने के लिए पृष्ठभूमि के रूप में प्रत्यक्षवाद और अनुभववाद को समझना आवश्यक है। हम जानते हैं कि प्रत्यक्षवाद पाश्चात्य में हिगल तथा ब्रेडले के विचार में अपनी चरम परिनति को प्राप्त करता है और अनुभववाद ह्यूम के विचार संदेहवाद में परिणत हो जाता है।

अनुभववादी दार्शनिक अनुभव को ही ज्ञान का स्रोत मानते हैं। यह धारणा ह्यूम के विचार में अधिक दृढ़ हो गई थी क्योंकि ह्यूम ने इन्द्रिय परीक्षण को ही ज्ञान का स्रोत माना था इन्हीं दोनों विचारधाराओं पर तार्किक प्रत्यक्षवाद आधारित है यही प्रत्यक्षवाद का खण्डन किया जाता है और ह्यूम के अनुभववाद को स्वीकार किया जाता है। ह्यूम का अनुभववाद वस्तुतः प्रत्यक्षवाद है। तार्किक प्रत्यक्षवादी दार्शनिक ह्यूम को अपना गुरु मानते हैं लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि ह्यूम के प्रत्यक्षवाद और तार्किक प्रत्यक्षवाद में कोई अन्तर नहीं है। ह्यूम अनुभव का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करते हैं लेकिन तार्किक प्रत्यक्षवाद तार्किक विश्लेषण को पद्धति के रूप में स्वीकार करते हैं। साथ ही ह्यूम के भाँति भौतिक सत्ता को इसलिए नहीं स्वीकार किया है कि

या तो वे अनुपयोगी हैं या अनेकस्वरूप और अस्तित्व को प्रमाणित नहीं किया जा सकता है लेकिन तार्किक प्रत्यक्षवादियों ने अतिभौतिक सत्ता को इसलिए अस्वीकार किया है कि इनके अनुसार (Metaphysical language) तत्त्वशास्त्रीय भाषा का विश्लेषण हमें इस निर्णय पर ले जाता है कि इसके निर्णय अर्थहीन है।

तार्किक प्रत्यक्षवाद के दो पक्ष हैं। I. निषेधात्मक तथा II. भावात्मक।

निषेधात्मक पक्ष में यह विचारधारा इन्द्रिय परीक्षण को अर्थ-निर्धारण करने के सिद्धान्त में स्वीकार करते हैं और इसके आधार पर दर्शन के क्षेत्र में से तत्त्वविज्ञान का बहिष्कार करते हैं। इन लोगों के अनुसार जिन निर्णयों का इन्द्रिय परीक्षण हो सकता है वही अर्थपूर्ण है "The sense of a proposition is the method of its verification" तत्त्वज्ञान के निर्णयों का इन्द्रियपरीक्षण सम्भव नहीं है क्योंकि ये निर्णय अनुभवातीत पदार्थ के विषय में होते हैं। फलस्वरूप तत्त्वशास्त्र के सभी के सभी निर्णय अर्थहीन है। इसप्रकार Verificational theory of meaning को स्वीकार करके तार्किक प्रत्यक्षवादियों ने दर्शन के क्षेत्र से तत्त्वविज्ञान का

बहिष्कार किया है।

तार्किक प्रत्यक्षवाद अपने भावात्मक पक्ष में यह दिखलाने का प्रयास करता है कि दर्शन का कार्य क्या है? जब दर्शन के क्षेत्र से तत्व विज्ञान को हटा दिया जाता है तो यह प्रश्न उठना अत्यन्त ही स्वभाविक है। अनुभव जगत से परे क्या सत्य है यह विचार करना तार्किक प्रत्यक्षवाद की दृष्टि में कोई प्रयोजन नहीं रखता है तो क्या यह कहा जा सकता है कि अनुभव जगत के विभिन्न पदार्थों का विश्लेषण करना इसका कार्य है? लेकिन तार्किक प्रत्यक्षवादी इसे भी नहीं मानते है क्योंकि यह कार्य विभिन्न प्राकृतिक विज्ञानों का है। इसप्रकार दर्शन के क्षेत्र से भौतिक तथा अतिभौतिक दोनों जगत तो क्या यह कहा जाय कि दार्शनिक चिन्तन को ही समाप्त कर दिया जाय? कभी-कभी यह कहा जाता है कि दर्शन सभी विज्ञानों को समन्वय करनेवाला है। यह विज्ञान की विभिन्न शाखाओं का ज्ञान संग्रहित करता है और विश्व का एक समग्ररूप उपास्थित करता है इसलिए इसे विज्ञानों का विज्ञान कहा जाता है लेकिन तार्किक प्रत्यक्षवादी इसे भी नहीं मानते है यह समन्वय की भावना कवियों और

कलाकारों की कल्पना का विषय है। अनुभव के द्वारा इसका प्रमाणिकरण नहीं हो सकता है फिर भी दर्शन का अपना निजि कार्य है जो किसी भी दृष्टिकोण से कम महत्वपूर्ण नहीं है। तार्किक प्रत्यक्षवादियों के अनुसार दर्शन का कार्य विभिन्न वैज्ञानिकों के द्वारा दिये गये प्रकथन का विश्लेषण करना है उनके प्रकारों और सम्बन्धों का अध्ययन करना है। और उनके निर्माणक पदों का अर्थ निर्धारित करता है इस संदर्भ में Carnap ने लिखा है — The proper function of Philosophy is to analyse the statements asserted by scientists, study their kinds and relations and analyse terms, as components of these statements and theories as ordered systems of those statements.

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि दर्शन कार्यरहित नहीं है बल्कि इसका अपना विशिष्ट कार्य है। इस कार्य को सम्पादित करने के लिए इन लोगों ने तर्कशास्त्र को ही इससे उपयुक्त पद्धति के रूप में स्वीकार किया है जिसे Logic of Science कहा जाता है। इसकी दो शाखायें हैं। 1. Logical synt

exe. ।। semantics पहली शाखा पूर्णतया से आकारिक शाखा है। जिसे Formal logic कहा जाता है। इसके अन्तर्गत विज्ञान की भाषात्मक अभिव्यक्ति के अनुरूपों का अध्ययन किया जाता है। इसमें यह नहीं देखा जाता कि निर्णय का सम्बन्ध वक्ता या श्रोता से क्या है? इसके अन्तर्गत सर्वप्रथम जटिल निर्णयों को सरल निर्णयों के अन्दर विश्लेषित किया जाता है फिर सरल निर्णयों का विश्लेषण उनके अनिर्मायक पदों के लिए किया जाता है जिनके द्वारा विभिन्न पद मिलकर किसी अर्थपूर्ण निर्णय की रचना करते हैं। इन निर्णयों के बीच संगतता या असंगतता भिन्नता या स्वतंत्रता इत्यादि सम्बन्धों का अध्ययन करना भी Logical Syntax का कार्य है। इसतरह यह स्पष्ट है कि इस शाखा के अन्तर्गत वैज्ञानिक भाषा का विश्लेषण होता है जिसके कारण हम विभिन्न विज्ञानों के मौलिक शब्दों का ज्ञान प्राप्त करते हैं और उनके आपसी तार्किक सम्बन्धों का अनुभव करते हैं।

Logic of Science की दूसरी शाखा सिमेन्टिक्स कहलाती है। इसका सम्बन्ध वक्ता,

श्रोता तथा इन विषयों के साथ होता है जिनके विषय में विभिन्न विज्ञानों में निर्णयों के बिच आपसी संबंध को देखना और इनका ज्ञान प्राप्त करना अर्थात पदार्थों का ज्ञान प्राप्त करना नहीं है। भाषा का संबंध विषय वस्तु से होता है जिसे तथ्य के बारे में निर्णय का प्रयोग किया जाता है इस तथ्य के साथ निर्णय का क्या संबंध है, इसे स्पष्ट करना Symentics का कार्य है। कभी-कभी हमारा निर्णय किसी वस्तु के बारे में होता है जैसे This is table, This is a pen इत्यादि। कभी-कभी हमारा निर्णय किसी वस्तु के गुण के बारे में होता है। जैसे — The table is brown, the pen is black इत्यादि। इसी प्रकार कभी-कभी निर्णयों के माध्यम से क्रिया व्यापार को व्यक्त किया जाता है जैसे The fan is moving fast, ~~...~~ He is doing this work. इस प्रकार यह स्पष्ट है कि निर्णयों का संबंध वस्तुओं के साथ जिनके बारे में निर्णयों कि रचना की जाती है। इन संबंधों का अध्ययन करना Symentics कार्य माना गया है।

इस प्रकार तार्किक प्रत्यक्षवादी यह स्पष्ट कर दिया है कि यद्यपि दर्शन का कार्य

भौतिक तथा अतिभौतिक पदार्थों का अध्ययन करना नहीं है क्योंकि ये दोनों ही दर्शन के क्षेत्र से बाहर हैं फिर भी यह नहीं कहा जा सकता है कि दर्शन का कोई कार्य नहीं है। Logic of science कि दो महत्वपूर्ण सारवाओं के द्वारा दर्शन अपने कार्य को संपादित करता है। अतः कहा गया है "The clarification of the results of the science through logical analysis constitute a very useful and worthy programe which philosophy can legitimately pursue."